विष्णुभट गोडसे वरसईकर

जन्म	:	1828 ।
जन्म-स्थान	:	ग्राम-वरसई, रायगढ़, महाराष्ट्र ।
पिता	:	पं० बालकृष्ण भट ।
शिक्षा	:	स्वाध्याय द्वारा परंपरागत रूप में संस्कृत, मराठी ।
वृत्ति	:	पुरोहिती-कर्मकांड एवं कृषि ।
कृति	:	एकमात्र 'माझा प्रवास' (मेरा प्रवास) मूल मराठी में ।
व्यक्तित्व	:	विद्वान, तेजस्वी, ऊँचे, भव्य और गौर ।

भारत के प्रथम स्वाधीनता संग्राम – 1857 के गदर का आँखों देखा विस्तृत विवरण प्रामाणिक रूप में प्रस्तुत करनेवाले भारतीय पं० विष्णुभट गोडसे वरसईकर कोई पेशेवर लेखक नहीं थे । वे आजीविका से कर्मकांडी और पुरोहित थे । थोड़ी बहुत खेती भी थी, किंतु अपर्याप्त । परिवार को ऋणमुक्त करने तथा उसके समुचित निर्वाह के लिए कुछ धन प्राप्त करने के प्रयोजन से वे उत्तर भारत की ओर आए थे, किंतु सन् 57 के गदर में फँस गए । उन्हें मथुरा जाना था जहाँ ग्वालियर की राजमाता वायजाबाई शिंदे सर्वतोमुखी यज्ञ करवाने जा रही थीं । यज्ञ में पौरोहित्य के द्वारा दान में कुछ आय हो जाने की प्रत्याशा थी उन्हें । मार्च 57 में बैलगाड़ी से वे पुणे पहुँचे और वहाँ से इंदौर, अहमदनगर, धुलिया, सतपुड़ा होते हुए मध्यप्रदेश में महू पहुँचे जहाँ उन्हें सिपाहियों से क्रांति की खबरें पहली बार मिलीं । सिपाहियों के मना करने पर भी वे आगे बढ़ते हुए उज्जैन, धारा होते हुए ग्वालियर पहुँचे । इस बीच उन्होंने गदर की घटनाओं को नजदीक से प्रत्यक्ष देखा-सुना । वे झाँसी आकर फँस गए । वहाँ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई के प्रत्यक्ष संपर्क में आए और उनका आश्रय और विश्वास प्राप्त कर काफी दिनों तक उनके साथ किले में भी रहे । अनेक कष्ट सहकर उन्होंने उत्तर भारत के कई तीर्थों की यात्रा की और लगभग ढाई साल बाद अपने गाँव वरसई वापस लौटे । अपने यजमान महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विद्वान श्री चिंतामणि विनायक वैद्य के आग्रह-अनुरोध पर उन्होंने यात्रा का आँखों देखा-भुगता सारा हाल अपनी उत्कृष्ट स्मृति के आधार पर लिखा – 'माझा प्रवास' !

हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार और लेखक **अमृतलाल नागर** ने 'माझा प्रवास' का प्रामाणिक भाषांतर बीसवीं शती के चौथे दशक में ही 'आँखों देखा गदर' नाम से किया था । यह पाठ उसी भाषांतरित रूप से संकलित-संपादित कर यहाँ प्रस्तुत किया गया है । पाठ में पं० विष्णुभट गोडसे वरसईकर के झाँसी प्रवास और रानी लक्ष्मीबाई से जुड़े संस्मरण अविकल रूप में प्रस्तुत हैं ।

◆ ◆ ◆

आँखों देखा गदर

चैत का महीना आन पहुँचा, गर्मी के झोंके लगने लगे । वसंत के जाने के बाद ग्रीष्म ऋतु का राज्य स्थापित हुआ । यह तो निश्चित हो ही चुका था कि झाँसी में लड़ाई होगी, इसलिए कुछ सावधान नागरिक अपने औरत-बच्चों और धन-दौलत को लेकर ग्वालियर चले गए ।

चैत बीता बैशाख लगा । एक दिन शहर के दक्षिण की ओर मैदान में तंबू दिखाई पड़ने लगे और इधर-उधर आग रोशनी भी दिखाई देती थी । साँझ के समय हम लोग किले के ऊँचे बुर्ज पर से देखने लगे तो शहर के चारों ओर जगह-जगह पर तंबू गाड़कर पल्टनें उतरी हुई दिखाई दीं । चारों तरफ हलचल मच रही थी । चढ़ाई हो गई है यह देखकर रात में बाई साहब खुद किले पर और शहर की दीवारों पर घूम-घूम कर बंदोबस्त करने लगीं । फाटकों के पास सिपाहियों की टुकड़ियाँ और उनके साथ एक-एक बहादुर और भरोसे के सरदार नियुक्त कर दिए गए । दूसरे दिन सवेरे शहर की दीवार के पास मोर्चा बाँधने के लिए अंग्रेजों के बीस-पचीस सवार दौड़ते हुए आए । किले के पश्चिम की तरफ आकर दीवार की तरफ बढ़ने लगे वैसे ही हमारी तरफ के दक्ष और होशियार गोलंदाज ने तोप में पलीता रख दिया । दस-पाँच मरे; बाकी भाग गए । इस तरह पहले दिन अंग्रेजी फौज शहर के चारों तरफ मोर्चे बाँधने का प्रयत्न करती थी, लेकिन हमारे गोलंदाज उनके चिथड़े उड़ाकर रख देते थे । दूसरे दिन भी इसी तरह मोर्चा बाँधने के लिए अंग्रेज पिले पड़े थे; लेकिन मोर्चा न बँध सका । शहर में जो बड़े-बूढ़े लोग थे, उन्हें यह मालूम था कि शहर या किले पर कहाँ से मोर्चा लागू होता है । लेकिन यह जानकारी भी बहुत थोड़े लोगों को थी । अंदर के षड्यंत्र के कारण कहो या बाहर ही अंग्रेजों को इस बात का जानकार मिला, यह कहो – तीसरे दिन अंग्रेज मौके समझ गए । फिर रात होने पर उन्होंने सब ठिकाने साधकर साधारण मोर्चे बाँधे और चार घड़ी रात रहे किले के पश्चिमी बाजू पर अंग्रेजों की दक्षिण तरफ की गरनाली तोप चलने लगी । इधर वायव्य दिशा की ओर भी तोप गोले बरसाने लगीं । शहर पर वार चलने लगी । यह देखकर बाई साहब को बड़ा दुख हुआ और निराशा की पहली सीढ़ी से उनका पैर लगा । परंतु वह जरा भी

झाँसी की रानी

न डगमगाई । जगह-जगह पर और अधिक बहादुर तैनात किए और स्वयं भी खाने-पीने की चिंता छोड़कर किले और शहर की दीवारों पर खपने लगीं ।

शहर पर तोप के गोले शुरू होने से रैयत को बड़ा त्रास हुआ । एकाध गोला रास्ते में पड़ा तो फूटकर दस-बीस-पचास को घायल करता और दस-पाँच मारे जाते । किसी घर पर पड़ा तो वह तो भस्म ही हो जाता था; उसके धक्के से आस-पास के छोटे घर खंडहर होकर गिर पड़ते थे । आग लग जाती थी । परंतु बाई साहब ने शहर में बंबों का इंतजाम बड़ा अच्छा कर रखा था । आग लगी नहीं कि बंबे तुरंत बुझाते थे । शहर में धंधा-रोजगार बिलकुल बंद हो गया था। इधर-उधर आने-जाने से लोग घबराते थे ।

इधर बाई साहब ने भी अपनी तरफ से अंग्रेजों की जबर्दस्त नाकाबंदी शुरू की । अंग्रेजों की तरफ के बहुत से लोग मारे गए । चौथे दिन दोपहर में अंग्रेजों ने किले के दक्षिण बुर्ज की तोप बंद कर दी । उस तोप पर कोई गोलंदाज टिक ही न पाता था। लोगों में बड़ी हौलदिली फैल गई । तभी पश्चिमी बुरूजवाले हमारे गोलंदाज ने अपने मोर्चे की तोप दक्षिण की तरफ लगा दी, दूरबीन से बेचूक निशाना साधकर तोप में पलीता लगाया और तीसरे धमाके में ही अंग्रेजों के उत्तम गोलंदाज को ठंडा कर दिया । इस तरह दक्षिण की तोप फिर चालू करके उसने अंग्रेजों की तोप बंद कर दी ।

रात में शहर और किले पर गोले पड़ते थे । पचास-साठ सेर का गोला जब तोप से उड़ता था तो एक छोटी-सी गेंद-सा दिखाई देता था । ये लाल भड़के गोले रात्रि के अंधकार में गेंद की तरह इधर-उधर आसमान में उड़ते हुए बड़े विचित्र लगते थे । दिन में सूर्य के प्रकाश में अप्रतिभ हो जाते थे । आदमी को ऐसा लगता था कि यह गोला मेरे ऊपर ही आकर पड़ेगा । लेकिन वह सात-आठ सौ कदम जाकर फूटता था । दिन-रात लगातार युद्ध होने से शहर जर्जर हो गया । पाँचवे-छठे दिन भी इसी तरह युद्ध चलता रहा । कभी पहर-डेढ़ पहर तक बाई साहब की जय होकर अंग्रेजों का नाश होता था और उनकी तोपें बंद हो जाती थीं । फिर कभी अंग्रेजों की जीत होने लगती थी – हमारी पल्टन घबराने लगती थी और तोपें बंद हो जाती थीं । सातवें दिन सूर्यास्त के बाद पश्चिमी मार्चे की तोप बंद हो गई । वहाँ कोई ठहर ही न पाता था और शत्रुओं की तोपों ने हमारा वह मोर्चा भी तोड़ डाला । रात में कुशल कारीगरों को चुपचाप बुर्ज पर चढ़ाया गया । ईंटे और गारा वगैरह नीचे से ऊपर पहुँचाने के लिए मनुष्यों की नसेनी-सी खड़ी कर दी गई थी। कारीगर भी बड़े ही चतुर और अपने काम में निपुण थे । दुश्मनों को आहट भी न मिली और रातोंरात मोर्चा बाँधकर तोप चालू कर दी गई । उस समय अंग्रेज गाफिल पड़े थे । उनका बड़ा नुकसान हुआ और पहर भर तक उनकी दो तोपें बंद पड़ी रहीं ।

आठवें दिन बड़ी प्रलय मची और बड़ा ही घनघोर युद्ध हुआ । बहादुर लोग जोर-जोर से एक-दूसरे को बढ़ावा दे रहे थे । बंदूकों और तोपों की आवाज के सिवा और कुछ सुनाई ही न देता था । नरसिंहे, नगाड़े, बिगुल आदि बज रहे थे । धूल और धुआँ, बारूद, गोले, बंदूकें और

बाजों की आवाज, मनुष्यों के चीत्कार सब मिलकर बड़ा ही भयंकर वातावरण उपस्थित कर रहे थे । अंग्रेजी फौजों ने बड़ी तबाही मचाई । परकोटे पर के सिपाही और गोलंदाज एक के बाद दूसरे गिरते थे और उनकी जगह नए लोग खड़े किए जाते थे । बाई साहब को बड़ी मेहनत करनी पड़ रही थी । चारों तरफ घूम-घूमकर सारा प्रबंध कर रही थीं । जहाँ जरा कमजोरी देखी वहीं आदमी बढ़ाए, आदमियों को हिम्मत दी परंतु उन्हें बड़ी ही चिंता थी कि पेशवा की तरफ से मदद क्यों नहीं आ रही । इस चिंता ने उनको किंकर्त्तव्यविमूढ़ बना दिया ।

इधर कालपी से तात्या टोपे पंद्रह हजार फौजें लेकर निकला और डबल कूच करता हुआ झाँसी पहुँचा । रातोंरात मोर्चा बाँधकर उसने तोपों में पलीता लगाया । इधर कप्तान साहब भी अंग्रेजी फौज लेकर उससे लड़ने के लिए आ धमका । वह लड़ाई का दसवाँ दिवस था । झाँसी के सब लोग इस लड़ाई पर ही झाँसी के भाग्य का निर्णय समझते थे । सब लोग युद्ध देखने के लिए परकोटे की दीवार पर आकर जम गए । दोनों ही ओर के सिपाही अपनी जान होम कर लड़ रहे थे । किसी को भी अपना भान नहीं रहा । आमने-सामने की लड़ाई थी । प्यादे से प्यादा, सवार से सवार जूझ रहा था । बिगुल, नरसिंघों, बंदूकों, तोपों इत्यादि की आवाज हवा में धुंध-सी बनकर छा गई थी । झाँसी वाली बाई और उसके सरदार लोग दूरबीन लगाकर देख रहे थे । परंतु झाँसी के दुर्भाग्य से कहो या तात्या टोपे की अकुशलता से कहो, या हिंदी सिपाहियों के नादान और अशूर होने से कहो, तात्या टोपे की फौज टूटने लगी । सिपाही लोग भागने लगे । अंग्रेजी फौजों ने मोर्चों पर से तोपें निकालकर भागने वालों पर निशाना साधा । रिसाले सवारों ने एकदम हल्का बोल दिया। यह देखकर स्वयं तात्या टोपे भी चौवीसपने और छत्तीसपने की तोप वहीं छोड़कर निकल लिया । विजय मिलने से अंग्रेजों की हिम्मत दुगुनी-चौगुनी हो गई । उन्हें लड़ाई का सामान भी मिला । झाँसी वालों में हाहाकार मच गया । सब लोग दुख, भय और निराशा से टूट गए ।

झाँसी का किला

परंतु निराशा की शक्ति भी कुछ विलक्षण ही होती है । सिपाहियों को जब यह विश्वास हो गया कि झाँसी अंग्रेजों के हाथ लगेगी और वे हमारे ऊपर जरा भी दया न करेंगे । इस विचार से उनका हौसला और दूना हो गया । बाई साहब ने सब सरदारों को इकट्ठा करके कहा कि आज झाँसी लड़ी तो कुछ पेशवा के बल पर नहीं और आगे भी उसे किसी की मदद की जरूरत नहीं। ऐसा निश्चय करके सरदार लोग और स्वयं बाई साहब परकोटे की दीवारों पर फिर से मेहनत करने लगे । उसी दिन रात में अंग्रेजी गोलंदाजों ने फिर भयंकर हमला किया । शहर और किले पर लाल-लाल गोलों की झड़ी लगा दी । किले के सब लोग रातभर जागते हुए बैठे रहे ।

रात गई और युद्ध का ग्यारहवाँ दिवस आ पहुँचा । बाई साहब तलवार बाँधे हुए चारों तरफ सबको हिम्मत बँधा रही थीं । गोलंदाजों को बख्शीशें दी गईं । जो तोपें बंद हो गई थीं, वे फिर शुरू हो गईं । अंग्रेजों ने अपनी सारी गरनाली तोपें किले पर ही लगा दीं । तब तो महलों में हाहाकार मच गया ।

उस दिन महलों पर ही अंग्रेजी तोपों की शनि दृष्टि थी; परंतु खास महल को कोई नुकसान नहीं पहुँचा। बादशाही जमाने का चूने से बना हुआ मजबूत महल कुछ यों ही टूट सकता था ? जहाँ गोला पड़ता वहाँ उतना बड़ा छेद हो जाता । यों दो-तीन छतों में भंबक हो जाते थे और गोला नाकाम हो जाता था । परंतु ऐसा नुकसान भी कुछ कम न हुआ था । महल के हरेक दालान पर गोले पड़ने लगे । तब तो सब लोग घबराकर नीचे की एक कोठरी को निर्भय स्थान समझकर उसमें भरने लगे । उस कोठरी के ऊपर पाँच मंजिलें थीं । भरते-भरते उसमें चौंसठ आदमी जमा हो गए, और वह ठसाठस हो गई । मैं भी उस कोठरी में था, दासियाँ भी थीं । गर्मी और भीड़ तथा प्राणों के भय के कारण शरीर से पसीना छूट रहा था । साँस छोड़ने की भी जगह न थी । मैं तो बिलकुल घबरा गया था । पूरी चार घड़ी उसमें काटी । मृत्यु के भय से बढ़कर दूसरा कोई भय नहीं । सबके ही जीव कसमसा रहे थे । परंतु बाई साहब के गोलंदाजों ने बड़ी दिलेरी और फुर्ती दिखाई । अंग्रेजों की तोपों को खाली कर दिया । तब कहीं जाकर महल में गोले पड़ने बंद हुए और सब लोग उस कोठरी से बाहर निकले ।

इस तरह लगातार ग्यारह दिन तक लड़ाई चली । फिर शाबाश है उस स्त्री को; उस रात को रोज की तरह बाई साहब शहर के और किले पर गश्त लगाकर जब बंदोबस्त कर रही थीं, इतने में ही एक भेदिए ने आकर खबर दी कि दो-ढाई लाख रुपयों का गोला-बारूद खर्च करके भी अंग्रेज सरकार को जय मिलती दिखाई नहीं देती । उनका गोला-बारूद भी अब चुक गया है। इसलिए कल पहर भर लड़ाई लड़ने के बाद उनका लश्कर उठ जाएगा । यह सुनकर बाई साहब को कितना आनंद हुआ होगा, यह तो उनका मन ही जानता होगा । उनके चेहरे पर और भी दमक आ गई और उनकी शक्ति और हिम्मत दुगुनी हो गई । उस रात को दो बजे के लगभग निश्चिंत होकर वह गहरी नींद में सो गईं । लेकिन बाई साहब के ग्रह अच्छे नहीं थे । लगभग पौ फटने के समय शहर के दक्षिण बाजू की तोप एकाएक बंद पड़ गई । यह खबर लेकर एक आदमी आया और बाई साहब को जगाकर उसने सारा हाल कहा । सारी हकीकत सुनकर सबके पेट में पानी हो गया और हमारे प्राण भीतर-ही-भीतर घुटने लगे । हर ! हर ! अट्ठासी पहर तक बड़ी बहादुरी से लड़ने के बाद अंत में अंग्रेजों ने शहर को सर कर ही लिया । छठी मंजिल पर जाकर मैं देखने लगा । उस समय सवेरे का धुँधला प्रकाश पड़ रहा था । देखा, हजारों मजदूरों के सिर पर घास के गट्ठर रखाए उनके पीछे-पीछे गोरे सिपाही शहर की दीवार चढ़े आ रहे हैं । देखते-ही-देखते वे ऊपर आ पहुँचे । घास वालों ने दीवार के पास पहुँचते ही अपने सिर के गट्ठर-एक-पर एक फेंककर सीढ़ी बना दी और उसके ऊपर से होकर गोरे सिपाही उतरने लगे । दीवार पर बाई साहब

के सिपाहियों में से कुछ तो भाग निकले और जो शूर थे, उन्होंने यथाशक्ति गोरों को रोका। परंतु वे बेचारे बहुत थोड़े थे, इसलिए मार डाले गए। दस-बारह मिनट के अंदर-ही-अंदर हजारों गोरे शहर की दक्षिण दीवार पर दिखाई देने लगे।

बाई साहब ने जैसे ही हकीकत को समझा वैसे ही सहस्र बिच्छुओं के डंक मारने के समान उन्हें दुख हुआ। चेहरे की आब उतर गई। अक्ल गुम हो गई। सोने के पहले जो खबर सुनी थी, वह क्या थी ! और अब यह खबर ! इसका अर्थ क्या है ? भय, दुख और आश्चर्य से चित्त ऐसा उद्विग्न हुआ कि क्या करना चाहिए, उन्हें सूझता ही न था ! बाहर आकर शून्य दृष्टि से वे दक्षिण दिशा की ओर देखने लगीं। जहाँ हजारों गोरे सिपाही बढ़े चले आ रहे थे। परंतु बाई साहब हम भट्ट भिक्षुकों की तरह कुछ नादान थोड़े ही थीं, भय और विचारशून्यता का क्षण दूर गया; तुरंत ही बाई साहब को शूरत्व का आवेश आ गया। पंद्रह सौ विलायती अर्थात मुसलमान अरब, जो बहुत दिनों से उनके यहाँ नौकर थे उन्हें लेकर तलवार खींचकर वे तुरंत ही किले से नीचे उतरीं और बड़े दरवाजे से दक्षिण की ओर चल दीं। गोरे लोग शहर में आ गए थे। उनकी तलवारें भी म्यानों से बाहर निकल आई थीं। सबके पीछे से चलते हुए बाई साहब सेना के मध्य से होकर तलवार लिए आगे बढ़ रही थीं। गोरे और विलायती लोगों की तलवारों में गाँठ पड़ते ही चारों ओर भीषण दृश्य उपस्थित हो गया कि उसकी उपमा केवल महाभारत के युद्ध से ही दी जा सकती है। सौ तक गिनती गिनने में देर लगेगी, परंतु जोश में भरे हुए विलायतियों को सैकड़ों गोरे मारने में उतनी भी देर न लगी। बाकी जो बचे थे, वे शहर में इधर-उधर भागकर घरों और पेड़ों की आड़ से बंदूक तानने लगे। पीछे से जो गोरे लोग आ रहे थे, उन्होंने भी तलवार न चलाकर दूर से ही गोलियाँ मारनी शुरू कीं। उस समय बाई साहब के साथ एक पचहत्तर वर्ष का वृद्ध और पुराना सरदार था। वह आगे आकर बाई साहब का हाथ रोककर कहने लगा, ''महाराज, इस समय आगे जाकर गोली का शिकार होना व्यर्थ है। गोरे लोग इमारतों की आड़ लेकर गोलियाँ चला रहे हैं। सैकड़ों गोरे शहर के अंदर आ गए हैं। इसलिए शहर के सब फाटक उन्होंने खोल दिए हैं। इस समय लड़ने से कुछ हासिल नहीं। आप किले में जाकर दरवाजा बंद करके फिर कोई युक्ति सोचें। हमें समय को फिर से लौटा लाना है।'' यह कहकर उसने बाई साहब को वापस भेज दिया और हाँक मारकर विलायतियों से भी लौटने को कहा, सब लोग किले में पहुँचकर फाटक बंद करके बैठ गए। https://www.evidyarthi.in/

इधर चारों ओर के फाटकों से गोरे अंदर आने लगे और विजन करना शुरू किया। पाँच बरस से लगाकर अस्सी बरस तक जो पुरुष दिखा, उसे गोली या तलवार से पार उतार दिया। शहर के एक भाग में आग भी लगा दी। आग पहले हलवाईपुरे से लगाई गई। उस समय शहर में ऐसा आर्तनाद फैला कि जिसका पार न था। भेड़िए जब भेड़ों के झुंड पर झपटते हैं, तब भेड़ों के प्राणों की जो दशा होती है; वही इस समय लोगों की थी। भय से आतुर होकर लोग बुद्धिहीन से इधर-उधर भाग रहे थे। भागते-भागते में ही बहुत से गोलियाँ खाकर मुर्दे हो गए। कोई इस

गली में लपका, कोई घर के तहखाने को भागा, कोई दाढ़ी-मूँछें साफकर स्त्री वेश धारण करके बैठ गया; कोई खेतों में जा छिपा। इस तरह अपने प्राण बचाने के लिए जिसे जो जुगत सूझी, वही करने लगा।

दूसरी ओर गोरे लोग घरों में घुसकर मनुष्यों की हत्या और सोने चांदी की लूट करने लगे। उनके घरों में घुसते ही जो दिखाई दिया उस पर सीधी बंदूक तन जाती थी, यदि उसने चटपट अपना माल-असबाब गोरों के हवाले कर दिया, तब तो भली-भला, नहीं तो प्राण यमलोक में।

इधर बाई साहब किले में आकर बड़ी शोक विह्वल होकर दीवानखाने में बैठ गईं। उस तेजस्वी स्त्री की उस समय की स्थिति और इसके अतिमानवीय पराक्रम का यह अत्यंत दुखकारक परिणाम देखकर हम सबके हृदय भर आए। सब लोग इधर-उधर चिंताक्रांत होकर धीरे-धीरे यही बातें करने लगे कि अब बाई साहब को क्या करना चाहिए, परंतु बाई साहब के पास कोई भी नहीं जाता था। एक पहर के बाद शहर के हाल-चाल लेने के लिए बाई साहब छत पर आईं। उस समय शहर का जो दीन दृश्य उनकी आँखों के सामने आया, उसे देखकर उनके आँसू न रुक सके। बाई साहब को यह लगा कि मेरे कारण इन बेचारे निरपराध प्राणियों की जानें जा रही हैं। स्त्रियों का हृदय बड़ा कोमल होता है। बाई साहब का हृदय दुख और करुणा से इतना ओत-प्रोत था कि उन्हें यह लगने लगा कि मैं महापातकी हूँ, यह निश्चय उनके मन में कायम हो गया। सब लोगों को बुलाकर उन्होंने कहा, ''मैं महल में गोला-बारूद भर कर इसी में आग लगाकर मर जाऊँगी, लोग रात होते ही किले को छोड़कर चले जाएँ और अपने प्राण की रक्षा के लिए उपाय करें।'' जिस वृद्ध सरदार ने सवेरे बाई साहब को किले लौटाया था, वही इस समय भी आगे बढ़ा और बाई साहब को दीवानखाने ले जाकर कहने लगा, ''महाराज आप जरा शांत हों। ईश्वर ही शहर पर यह दुख लाए हैं; मनुष्य उसका कोई इलाज नहीं कर सकता। आत्महत्या करना बड़ा पाप है। दुख में धैर्य धारण करके गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि उससे बचने के लिए आगे कोई रास्ता निकल सकता है या नहीं। आप शूर हैं, रात में तैयारी करके शहर के बाहर निकल चला जाय। मौका पड़ने पर शत्रु से दो हाथ लड़ते हुए घेरा तोड़कर पेशवा से मिला जाय। इस बीच में यदि मृत्यु आ गई तो बहुत अच्छा। यहाँ आत्महत्या करके पाप संचय करने की अपेक्षा युद्ध में स्वर्ग जीतना उत्तम है।'' इन शब्दों से बाई साहब को बहुत कुछ धीरज बँधा और वे स्वस्थ हुईं।

इधर बाई साहब रात के बारह बजे सब तैयारी करके किले के बाहर निकलीं। मोरोपंत तांबे आदि जितने सगे-संबंधी थे, वे सब भी हंथियारबंद होकर घोड़े पर सवार होकर साथ हो गए। हरेक की कमर से मोहरें बँधी थीं। खंजाने में जो कुछ अर्थ था, वह सब एक हाथी पर लादा गया और उसे बीच में किया गया। साथ में दो सौ पुराने और जान पर खेल जाने वाले सरदार थे। इसके अलावा सवेरे अंग्रेजों के छक्के छुड़ाने वाले एक हजार दो सौ विलायती बहादुर भी चल रहे थे। बाई साहब पाजामा, स्टाकिन बूट वगैरह पुरुष वेश धारण किए हुए थीं और

हरबे-हथियार से पूरी तरह लैस थीं । बाई साहब जिस घोड़े पर सवार थीं, वह एकदम सफेद था, ढाई हजार रुपए में खरीदा गया था और राजरत्न के समान ही उसका आदर था । उस घोड़े पर बैठकर पीछे रेशमी दुपट्टे से अपने बारह वर्ष के दत्तक पुत्र को बाँधकर, और साथ में केवल एक रुपए की रेजगारी लेकर महारानी बाहर निकलीं । शाबाश है उस स्त्री को !

जैसे ही बाई साहब शहर से निकलीं कि अंग्रेजों को खबर मिली । तुरंत हो-हल्ला करके सबको सावधान किया और तोप चालू की । बाई साहब के पास बंदूक थी । वे उसे दागती हुई घोड़ा फेंककर भागीं । उस हुल्लड़ में दोनों तरफ के बहुत से कट गए । जो बचे थे, वे अँधेरे में रास्ता भटककर जहाँ सींग समाया, वहाँ भागे । चारों ओर सवार ही सवार थे । उसमें अंग्रेजों को यह पता ही नहीं लग ~ या कि बाई साहब का घोड़ा कौन-सा है । बाई साहब ने जो घोड़ा फेंका तो वह पल भर में अंग्रेजी फौजों का घेरा तोड़कर उन्हें बहुत पीछे छोड़ता हुआ आगे निकल गया । इस तरह बाई साहब दुश्मन के घेरे पार करके कालपी के रास्ते पर चल दीं ।

X **X** **X**

कालपी का रास्ता पकड़कर मंजिल-दर-मंजिल मारते हुए एक दिन साँझ को एक खेड़े में जाकर बस्ती की । कालपी वहाँ से लगभग छह कोस रहा होगा । गाँव के बाहर वृक्ष के नीचे उतरकर भोजन बना-खाकर हम लोग सो गए । प्रत्यूष बेला में एकाएक हल्ला सुनकर आँख खुल गई । उठकर देखता हूँ तो सैकड़ों सवार रास्ता उधेड़ते हुए चले आ रहे हैं । हम जल्दी-जल्दी अपना सामान लपेट-लपाट कर, यह सोचते हुए कि भगवान ! अब जाने कौन-सा संकट आएगा ? सिपाही लोगों के साथ ही भागे । थोड़ी देर बाद समझ में आया कि चरखारी में पेशवा की अंग्रेजों से मुठभेड़ हुई थी, तो उसमें पेशवा की हार हुई । उनके साथ झाँसी वाली रानी भी थीं, वह फौज लौटकर अब फिर कालपी जा रही थी । तब हम जरा निश्चिंत हुए । पौ फटते-फटते एक कुएँ के पास जाकर बैठ गए । हम लोग बैठे ही थे कि चार-पाँच सवार कुएँ की तरफ से होते हुए निकले । उसमें झाँसी वाली रानी भी दिखाई दीं । सारी पोशाक पठानी थी और शरीर धूल से भर रहा था । मुख किंचित आरक्त, म्लान और उदास था । उन्हें बहुत प्यास लगी थी और घोड़े से उतरकर हमारे पास आकर पूछने लगीं, ''आप लोग कौन हैं ?'' मैंने तुरंत ही आगे बढ़कर हाथ जोड़कर कहा, ''महाराज ! आप ही की प्रजा हैं।'' बाई साहब हमें पहचान गई । मैं मटके को जैसे ही कुएँ में छोड़ रहा था कि बाई साहब बोलीं, ''आप विद्वान हैं, अतः मेरे लिए पानी न खींचें। मैं ही खींचे लेती हूँ ।'' उनके ये उदारता से भरे हुए शब्द सुनकर मुझे बड़ा बुरा लगा। परंतु निरुपाय होकर रस्सी और मटका रख दिया । बाई साहब ने पानी खींचकर उसी मिट्टी के पात्र से अंजलि बाँध कर पानी पिया । दैवगति बड़ी विचित्र है । फिर बड़ी निराश मुद्रा में कहने लगीं, ''मैं आध सेर चावल की हकदार, मेरी ऐसी रांड़मुड़ को विधवा धर्म छोड़कर यह सब उद्योग करने की कुछ जरूरत नहीं थी, परंतु धर्म की रक्षा के लिए जब इस कर्म में प्रवृत्त हुई हूँ तो इसके

लिए ऐश्वर्य, सुख, मान, प्राण सबकी आशा छोड़ बैठी हूँ । न जाने कौन-से पाप के फल से ईश्वर हमें यश नहीं देते । चरखारी में बड़ी लड़ाई हुई; परंतु जय शत्रुओं को ही मिली । अब वे कालपी की तरफ बढ़े आ रहे हैं । जल्दी ही वहाँ भी जंग होगी । जो कुछ लिलार में लिखा होगा, सो तो होगा ही ।'' यह कहकर बाई साहब उठीं । हम भी खड़े हो गए । बाई साहब घोड़े पर सवार हुई तब एकाएक उन्होंने पूछा, ''कालपी क्यों जा रहे हैं ?'' उनके पूछने पर मैंने कहा, ''कालपी में बहुत से दक्षिणी हैं । उनसे कुछ दक्षिणा लेकर यमुना पार करके गंगा स्नान के लिए ब्रह्मावर्त्त क्षेत्र जाना चाहते हैं ।''

''अच्छा तो तुम कालपी में गोदाम पर आना !'' यह कहकर बाई साहब ने घोड़ा बढ़ाया ।

कालपी में तीन दिन लड़ाई चली । पेशवा की फौजें लड़ाई के लिए बेकार हो चुकी थीं । दिल्ली, लखनऊ, झाँसी वगैरह में अंग्रेजों की जय होने से गदरवाले बहुत कुछ निराश हो चुके । इसलिए बहुत से पुराने तजुर्बेकार पल्टनी लोग अपने प्राणों के भय से पल्टनें छोड़कर चले गए थे । अंग्रेज सरकार ने उनके नाम पहले से ही जगह-जगह जाहिरनामे में लगा रखे थे । इसलिए भेष बदलकर वे लोग दूसरे-दूसरे काम-धंधे करने लगे । जो नए लोग रखे गए थे, वे बिलकुल नौसिखिए थे । उन्हें ढंग की कवायद भी न आती थी; इसलिए टिकाऊ नहीं थे । इतना ही नहीं, गदर में अच्छे और दमदार लोग जब मिलने को राजी नहीं हुए तो नए सिपाहियों, चोरों, लुच्चों और लुटेरों की भर्ती होने लगी । उनका लक्ष्य लड़ाई न होकर लूट अधिक थी । तीसरे दिन जब उन सिपाहियों को लगा कि जीत अंग्रेजों की ही होगी और पेशवा टूटेंगे तो वे लोग सैकड़ों की तादाद में लड़ाई का मैदान छोड़कर शहर में आ घुसे और दंगा, लूट, अनीति मचाई, चीनी की तो सड़क पर बिछायत बिछ गई । अनाथ स्त्रियों की बड़ी ही दुर्दशा की गई । ये लोग लूटपाट कर ही रहे थे कि इतने में अंग्रेज लोग सारे मोर्चे जीतकर शहर में आ गए । उन्हें देखते ही ये डाकू काले सिपाही जहाँ सींग समाया, उधर ही भाग निकले । सैकड़ों की हत्या हुई । तात्या टोपे, झाँसी वाली बाई और राव साहब तो अपना रंग फीका देखकर पहले ही जंगलों में निकल गए थे ।

X **X** **X**

ग्वालियर में शिंदे सरकार के आश्रय में जो लड़वैये लोग थे वे तात्या टोपे के साथ चले गए थे । कालपी में पेशवा की हार होने पर वे सब पल्टनें ग्वालियर की ओर पलट पड़ीं । मुरार में शिंदे सरकार की फौजी छावनी थी । उन्होंने वहाँ जाकर मोर्चा बाँधा और शिंदे को कहलाया कि या तो खर्चे के लिए हमें चार लाख रुपए दो, नहीं तो मैदान में आओ । उस पर दिनकर राव राजवाड़े, दीवान ने जवाब दिया कि हम लड़ाई के लिए तैयार हैं । जयाजी महाराज शिंदे, उनके दीवान आदि सब फौजें लेकर मुरार नदी के पार पहुँचे । शिंदे की तरफ के बहुत पल्टनियों ने यह कहा कि हम लड़ाई का ठाट तो बाँध देंगे; लेकिन पेशवा पर गोली नहीं छोड़ेंगे क्योंकि वे आपके और हमारे, दोनों के मालिक हैं । इतने में ही गदरवाली फौज की तरफ से तोप में पलीता दे दिया

गया और मारू बाजे बजने लगे । शिंदे और दीवान ने अपनी ओर के गोलंदाजों को बहुत-बहुत कहा, मगर उन्होंने जवाब दे दिया कि हम नमकहरामी नहीं करेंगे । शिंदे राजा और दीवान दोनों ही घोड़े से उतर पड़े और अपने हाथों तोप में बत्ती लगाई। परंतु तोपों के अंदर तो बाजरे की थैलियाँ भरी हुई थीं । तब तो शिंदे राजा और दीवान राजवाड़े हक्का-बक्का हो गए और तुरंत ही घोड़े पर सवार होकर आगरा का रास्ता पकड़ा ।

इधर लड़ाई की चुटपुट तो हो ही चुकी थी, सौ-दो सौ आदमी मारे-काटे गए कि इतने में शिंदे और उनके दीवान के भाग जाने की खबर चारों ओर फैल गई । शिंदे के सिपाही यह सुनते ही इधर-उधर भाग खड़े हुए । लड़ाई बंद हो गई । श्रीमंत पेशवा की ओर शहनाई बजने लगी और उन्होंने लश्कर की ओर कूच किया । शिंदे सरकार ने फूलबाग नामक एक बड़ा ही रमणीय बाग लगवाया था । श्रीमंत वहाँ एक रात बंगले में ठहरे । गदरवालों ने सारा बगीचा उजाड़ डाला। हाथी, ऊँट वगैरह इधर-उधर छोड़ दिए गए, सो पेड़-फूलों की दुर्दशा हो गई । बंगले के अंदर लगे हुए शीशे तक फोड़ डाले । शहर में सर्राफा और दुकानें फटाफट बंद हो गईं । सड़कों पर भूत लोटने लगा । फिर श्रीमंत ने डौड़ी पिटवा कर सब दुकानें खुलवाईं और रीति मत फिर से व्यवहार शुरू हुआ । शहर के राजमहलों में पहले किसे भेजा जाए, श्रीमंत राव साहब इसका विचार कर रहे थे तभी झाँसी वाली रानी ने स्वयं वहाँ जाने की आज्ञा माँगी । राव साहब ने कहा कि शत्रु का शहर है, महलों में बड़े धोखे होंगे । बंदोबस्त करके जाना । तब बाई साहब दो सौ सवारों को लेकर बड़े गंभीर भाव से शहर में आईं । सवारी सर्राफे और प्रमुख बाजारों से चली जा रही थी। बाई साहब के सम्मान में सिपाही आगे बंदूकों से हवा में फायर करते चलते थे । इस तरह सवारी महलों में पहुँची । महल के पीछे वाले हिस्से के लोग अभी नहीं गए थे । कारण कि वे सब बायजा बाई साहब शिंदे के कारकुन थे । उन्होंने जाकर कहा कि इधर बायजा बाई साहब रहती हैं, अपने लोगों को इधर आने से रोक दीजिए । झाँसी वाली रानी ने तुरंत ही अपने लोगों को ताकीद कर दी, कि जहाँ-जहाँ बाई साहब के ताले पड़े हों, उधर तुम लोगों के जाने का कोई काम नहीं । बायजा बाई साहब चार-पाँच दिन पहले महल छोड़कर परेड की तरफ चली गई थीं ।

झाँसी वाली रानी ने महल में जाकर पहले तो वहाँ की सब चीजें अपने ताबे में ले लीं और फिर राव साहब और तात्या टोपे को खबर भेजी कि यहाँ सब ठीक है, आप चले आइए । तब राव साहब की सवारी बड़े ठाट-बाट के साथ शहर के बड़े-बड़े बाजारों से होकर धीरे-धीरे आगे चलती हुई महलों में आई । शिंदे सरकार के मुनीमों और कारकुनों ने उनको भेंट की । राव साहब ने कहा कि हम यहाँ ब्रह्मभोज कराना चाहते हैं, इसलिए कल से मुक्त द्वार भोजन का प्रबंध करो । बेसन के लड्डू और पकवानों के साथ एक-एक रुपया दक्षिणा बाँटी जाय । जब तक हम यहाँ रहेंगे, तब तक रोज यह कायदा चलेगा । मुनीमों ने हाथ जोड़कर कहा कि महाराज के हुकुम के अनुसार ही सब सरंजाम हो जाएगा ।

इस तरह बड़ी राजी-खुशी से श्रीमंत राव साहब ने वहाँ अठारह दिन बिताए ।

रोज मुक्त द्वार होता था । शहर का प्रबंध बहुत अच्छा कर रखा था, मुरार में एक पल्टन तैनात थी । लेकिन अठारहवें दिन ग्यारह–बारह बजे के लगभग अचानक बड़ी खलबली मच गई । खबर पड़ी कि आगरे से अंग्रेजी फौज ने आकर मुरार पर हल्ला बोल दिया है । उसी दम झाँसी वाली बाई, तात्या टोपे और राव-साहब घोड़े पर सवार होकर एक फौज के साथ मुरार की ओर दौड़ गए ।

मुरार में घमासान युद्ध छिड़ गया । झाँसी वाली के गोली लगी, पर वह मानी नहीं । दूसरा तलवार का करारा हाथ उनकी जांघ पर पड़ा । उस समय वे घोड़े से गिरने लगीं । तात्या टोपे ने चट से उन्हें संभालकर घोड़ा आगे बढ़ा दिया । बाई साहब की मृत देह को एक जगह रखकर लोगों ने उसका दहन किया । अंग्रेजों की जीत रही । गदर वाले इधर–उधर भागने लगे । इस प्रकार रणांगण में उस मशहूर देवीस्वरूपिणी स्त्री ने मृत्यु पाकर स्वर्ग को जीता, परंतु गदर वालों की सदा उत्साह और शूरता से चमकने वाली प्रत्यक्ष वीरश्री निस्तेज हो गई ।

❑❑❑

अभ्यास

पाठ के साथ

1. अंग्रेजों को किले को समझने में कितने दिन लगे ? फिर उन्होंने क्या किया ?
2. लक्ष्मीबाई को पहली बार निराशा कब हुई ?
3. शहर में गोले पड़ने से आम जनता को क्या-क्या कष्ट होने लगे ?
4. सातवें दिन सूर्यास्त के बाद क्या हुआ ? रात के समय तोपें क्यों चालू की गई ?
5. सिपाहियों को जब लगा कि झाँसी अंग्रेजों के हाथ लग जाएगी तो उन्होंने क्या किया ?
6. बाई साहब ने सरदारों से क्या कहा ? बाई साहब के कहने का सरदारों पर क्या असर पड़ा ?
7. दसवें दिन की लड़ाई का क्या महत्त्व था ? दसवें दिन की लड़ाई का वर्णन संक्षेप में करें ।
8. भेदिए ने लक्ष्मीबाई को आकर क्या खबर दी ? लक्ष्मीबाई पर इस खबर का क्या प्रभाव पड़ा ?
9. विलायती बहादुर कौन थे? पाठ में वर्णित उनकी भूमिका का वर्णन कीजिए ।
10. लक्ष्मीबाई को वृद्ध सरदार ने किन-किन अवसरों पर सलाह दी, इसके क्या परिणाम हुए ?
11. शहर की दीवार पर चढ़ने के लिए अंग्रेजों ने कौन-सी युक्ति सोची ?
12. गोरे लोग झाँसी शहर में घुसकर क्या करने लगे ? अपने प्राण बचाने के लिए लोगों ने क्या किया ?

13. ''मैं महल में गोला-बारूद भर कर इसी में आग लगाकर मर जाऊँगी, लोग रात होते ही किले को छोड़कर चले जाएँ और अपने प्राणों की रक्षा के लिए उपाय करें ।'' लक्ष्मीबाई ने ऐसा क्यों कहा ? इस कथन से उनके व्यक्तित्व का कौन-सा पहलू उभरता है ? अपने शब्दों में लिखें ।
14. ''यहाँ आत्महत्या करके पाप संचय करने की अपेक्षा युद्ध में स्वर्ग जीतना उत्तम है ।'' वृद्ध सरदार के इस कथन का लक्ष्मीबाई पर क्या प्रभाव पड़ा ?
15. ''मैं आध सेर चावल की हकदार, मेरी ऐसी रांडमुड़ को विधवा धर्म छोड़कर यह सब उद्योग करने की कुछ जरूरत नहीं थी, परंतु धर्म की रक्षा के लिए जब इस कर्म में प्रवृत्त हुई हूँ तो उसके लिए ऐश्वर्य, सुख, मान, प्राण सबकी आशा छोड़ बैठी हूँ ।'' लक्ष्मीबाई के इस कथन की सप्रसंग व्याख्या करें ।
16. ''आप विद्वान हैं । अतः मेरे लिए पानी न खींचें ।'' लक्ष्मीबाई के इस कथन से उनके व्यक्तित्व का कौन-सा पहलू उभरता है ?
17. कालपी की लड़ाई का वर्णन लेखक ने किस तरह किया है ? कालपी के युद्ध के तीसरे दिन सिपाहियों ने क्या किया ?
18. लक्ष्मीबाई की मृत्यु किस तरह हुई ? उनकी वीरता का वर्णन अपने शब्दों में करें ।
19. निम्नलिखित वाक्यों की सप्रसंग व्याख्या करें –
    (क) परंतु निराशा की शक्ति भी कुछ विलक्षण ही होती है ।
    (ख) भेड़िए जब भेड़ों के झुंड पर झपटते हैं, तब भेड़ों के प्राण की जो दशा होती है; वही इस समय लोगों की थी ।
    (ग) आत्महत्या करना बड़ा पाप है, दुख में धैर्य धारण करके गंभीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि उससे बचने के लिए आगे कोई रास्ता निकल सकता है या नहीं ।

पाठ के आस-पास

1. कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने लक्ष्मीबाई पर कुछ कविताएँ लिखी हैं । उनकी एक कविता **'झाँसी की रानी की समाधि पर'** यहाँ दी जा रही है -

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी ।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी ।।

यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की ।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ।।

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला-सी ।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला-सी ।।

सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी ।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी ।।

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से ।
मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से ।।

रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी ।
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी ।।

इससे भी सुंदर समाधियाँ
हम जग में हैं पाते ।
उनकी गाथा पर निशीथ में
क्षुद्र जंतु ही गाते ।।

पर कवियों की अमर गिरा में
इसकी अमिट कहानी ।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है वीरों की बानी ।।

बुंदेले हरबोलों के मुख
हमने सुनी कहानी ।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी
झाँसी वाली रानी ।।

यह समाधि, यह चिर समाधि
है झाँसी की रानी की ।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की ।

सुभद्रा कुमारी चौहान की एक अन्य कविता झाँसी की रानी' उपलब्ध करें और कक्षा में उसका सस्वर पाठ करें ।

2. पाठ में आए प्रमुख स्वतंत्रता सेनानियों की जीवनी एकत्रित करें ।
3. 1857 की क्रांति को इतिहासकारों ने विभिन्न नामों से पुकारा है । इसे गदर, सिपाही विद्रोह, प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन आदि कहा गया है । आप इसे क्या कहना चाहेंगे । कारण सहित बताएँ ।
4. 1857 की क्रांति के प्रमुख स्थलों को मानचित्र पर दिखाएँ एवं इस क्रांति के कारणों पर एक निबंध लिखें ।
5. यह पाठ 'आँखों देखा' है । इसी तरह आप अपने विद्यालय में हुए क्रिकेट या फुटबॉल मैच का आँखों देखा हाल अपने शब्दों में लिखें ।
6. पाठ का आरंभ इस प्रकार हुआ है–'चैत का महीना आन पहुँचा । गर्मी के झोंके लगने लगे । वसंत के जाने के बाद ग्रीष्म ऋतु का राज्य स्थापित हुआ ।' आप अपने अनुभव के आधार पर वसंत के जाने और चैत के आने के साथ प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों पर एक निबंध लिखें ।
7. पाठ में कुछ वाद्य यंत्रों का उल्लेख है । क्या आपने उन्हें देखा है ? इन वाद्य यंत्रों की एक सूची बनाएँ एवं अपने शिक्षक और मित्रों की सहायता से उन्हें देखने की कोशिश करें ।
8. यह पाठ 'आँखों देखा गदर' नामक मूल पुस्तक से संकलित है । स्कूल के पुस्तकालय में मूल पुस्तक मँगवाएँ और उसे पढ़ें ।
9. इस पुस्तक का अनुवाद हिंदी के प्रसिद्ध कथाकार अमृतलाल नागर ने मूल मराठी से किया है । अमृतलाल नागर की पाँच रचनाओं के नाम शिक्षक से मालूम करें एवं उन रचनाओं को पढ़ें ।
10. सफल अनुवाद वह है जो अनुवाद की तरह न लगकर मूल कृति की तरह लगे । क्या इस अनुवाद को आप सफल अनुवाद मानेंगे ? इसमें ऐसा क्या है कि आपको यह रचना मूल कृति की तरह लगती है ?

भाषा की बात

1. निम्नलिखित वाक्यों से विशेषण चुनें –
   (i) दूरबीन से बेचूक निशाना साधकर तोप में पलीता लगाया और तीसरे धमाके में ही अंग्रेजों के उत्तम गोलंदाज को ठंडा कर दिया ।
   (ii) ये लाल भड़के गोले रात्रि के अंधकार में गेंद की तरह इधर-उधर आसमान में उड़ते हुए बड़े विचित्र लगते थे ।
   (iii) उस दिन महलों पर ही अंग्रेजी तोपों की शनि दृष्टि थी ।
   (iv) बहुत से पुराने तजुर्बेकार पल्टनी लोग अपने प्राणों के भय से पल्टनें छोड़कर चले गए थे।
   (v) राव साहब ने कहा कि शत्रु का शहर है; महलों में बड़े धोखे होंगे ।

(vi) इस तरह बड़ी राजी-खुशी से श्रीमंत राव साहब ने वहाँ अठारह दिन बिताए ।

(vii) शहर का प्रबंध बहुत अच्छा कर रखा था ।

(viii) कारीगर भी बड़े ही चतुर और काम में निपुण थे ।

2. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाएँ -
हलचल, हौलदिली, नाकाबंदी, जर्जर, बुर्ज, भाग्य, दूरबीन, मंजिल, भिक्षुक, किला, धूल

3. उत्पत्ति की दृष्टि से निम्नलिखित शब्दों की प्रकृति बताएँ -
चैत, ग्रीष्म, नागरिक, पल्टन, वायव्य, बहादुर, शहर, बंबों, तंबू, नाकाबंदी, परकोटा, फौज, दालान, किला, खबर, गली, तहखाना, प्राण, ब्रह्मावर्त्त

4. 'सारी हकीकत सुनकर सबके पेट में पानी हो गया और हमारे प्राण भीतर ही भीतर घुटने लगे ।' यहाँ 'पेट में पानी होना' और 'प्राण घुटना' का क्या अर्थ है ? इन मुहावरों के प्रयोग के बिना इस वाक्य को इस तरह लिखें कि अर्थ परिवर्तित न हो ।https://www.evidyarthi.in/

5. 'सर कर लिया' मुहावरा का क्या अर्थ है ? पाठ से अलग वाक्य में प्रयोग करें ।

6. 'सींग समाना' का क्या अर्थ है ? वाक्य में प्रयोग करें ।

7. इस पाठ में प्रयुक्त मुहावरों का सावधानी के साथ चयन करें और पाठ के आधार पर उनका अर्थ स्पष्ट करें ।

शब्द निधि :

बंदोबस्त	:	प्रबंध
गोलंदाज	:	गोला दागने वाला
रैयत	:	प्रजा
त्रास	:	भय
बंबा	:	पानी वाला बड़ा कनस्तर
नाकाबंदी	:	घेराबंदी
वायव्य	:	उत्तर-पश्चिम
बुर्ज	:	किले का सबसे ऊपरी गोलाकार हिस्सा
हौलदिली	:	भय, आतंक की मनोदशा
बुरूज	:	बुर्ज, गुंबद
अप्रतिभ	:	फीका, चमक विहीन
जर्जर	:	कमजोर, पुराना
पल्टन	:	सेना
नसेनी	:	सीढ़ी
ग्रास	:	निवाला
किंकर्त्तव्यविमूढ़	:	वह मनोदशा जिसमें कोई उपाय न सूझे
नरसिंहा	:	एक प्रकार का वाद्ययंत्र जो युद्ध में बजाया जाता है
बिगुल	:	एक प्रकार का वाद्ययंत्र जो युद्ध में बजाया जाता है

गाफिल	:	लापरवाह
परकोटा	:	किले की सुरक्षा दीवार
नादान	:	भोला
रिसाला	:	घुड़सवार
भेदिया	:	जासूस, भेद बताने वाला
बख्शीश	:	इनाम
शनि दृष्टि	:	बुरी दृष्टि
भंबक	:	बड़ा छेद
गश्त लगाना	:	पहरा देना
बाजू	:	बाँह, ओर
सहस्त्र	:	हजार
विजन	:	निर्जन, जनशून्य
दीवानखाना	:	मुख्य हॉल
शोक विह्वल	:	दुख से व्याकुल
आर्तनाद	:	दुख से भरी पुकार
जुगत	:	उपाय, युक्ति
माल-असबाब	:	सामान
चिंताक्रांत	:	चिंता से घिरा हुआ
महापातकी	:	महानीच, महापापी
शूर	:	वीर
खासमहल	:	महल का भीतरी हिस्सा जिसमें राजा-रानी रहते हों
लश्कर	:	सेना का पड़ाव
हकीकत	:	वास्तविकता
सर कर लेना	:	जीत लेना
आब	:	आभा, चमक
युक्ति	:	उपाय
निरुपाय	:	लाचार
दत्तक पुत्र	:	गोद लिया हुआ पुत्र
खेड़ा	:	निर्जन मैदान
किंचित	:	थोड़ा
आरक्त	:	लाल
म्लान	:	मुरझाया हुआ
दैवगति	:	भाग्य का लिखा
संचय	:	जमा, इकट्ठा

अर्थ	:	धन
प्रत्यूष बेला	:	भोर का समय
लिलार	:	ललाट, भाग्य
दक्षिणी	:	दक्षिण में रहनेवाला
ब्रह्मावर्त	:	पुष्कर के आस-पास का इलाका
तजुर्बेकार	:	अनुभवी
जाहिरनामा	:	विज्ञप्ति, प्रकाशित सूची
नौसिखिए	:	अनुभवहीन
कवायद	:	परेड
मारू	:	युद्ध में बजाया जाने वाला वाद्य
कारकुन	:	कर्मचारी
ताकीद	:	विदित, चेतावनी, सावधान